प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

जब तुम्हारे मन में यह प्रश्न उभरे, "क्या प्रेम की अनुभूति करना मेरी नियति में है?"—तो इसमें रुचि लो। क्षण भर के लिए इस पर विचार करो। ऐसा लगता है कि इंसान अपने आपको हक़दार समझता है। वह कहता है कि उसे प्रेम की तड़प है, मगर प्रेम को पहचानने का वह ज़रा भी प्रयत्न नहीं करता। विशेषाधिकार जताकर किसी चीज़ को पाया नहीं जा सकता। प्रेम की अनुभूति किसी की सनक या शर्तों के अधीन नहीं होती। प्रेम खुद अपने ही नियमों पर चलता है। प्रेम स्वतः गतिमान होता है। प्रेम हमेशा प्रेम ही रहेगा।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।